।। ओ३म् ।।

प्रभु से विनय

हे परमात्मन तू अनुपम है। तू संसार को चेतना प्रदान करने वाला है। प्रभु! हम भी उस महान चेतना को चाहते हैं जिस चेतना में मानव को अन्धकार प्राप्त नहीं होता। सदैव प्रकाश ही प्रकाश रहता है। जो मानव उस महान ब्रह्ममुख में परणित हो जाता है, ब्रह्म चेतना में रमण करने लगता है उसे सर्वत्र ब्रह्म ही ब्रह्म प्रतीत होने लगता है। तो वह मानव इस संसार में उज्ज्वलता को प्राप्त होता हुआ उस महान मण्डल में परणित हो जाता है जहाँ अन्धकार नहीं होता, जहाँ सूर्य भी अस्त नहीं होता, जहाँ न सूर्य उदय होता है न अस्त होता है, एक रस रहने वाला है। इसीलिए आज हम अपने उस प्यारे प्रभु का गुणगान गाने के लिए आये हैं। हे परमात्मा! आज हम उन महान् लोकों को चाहते हैं, जहाँ अन्धकार नहीं होता, जहाँ सदैव प्रकाश होता है। इसलिए हम आपकी आराधना करते हुए इस मानवता से देवत्व में जाना चाहते हैं। देवत्व से भी प्रभु! हम महादेवत्व बनना चाहते हैं। जिससे भगवन्! हमारे हृदय में किसी प्रकार की विडम्बना न होने पाये। क्योंकि वह जो विडम्बना होती है यह मानव के विनाश का मूल कारण बनती चली जाती है। प्रभु! हम अपने हृदय में प्रसन्नता चाहते हैं, महत्ता चाहते हैं, उज्ज्वलता चाहते हैं। जिससे भगवन्! हमारा जीवन एक आनन्द में परणित होता हुआ महत्ता की वेदी पर रमण करता हुआ इस संसार-सागर से पार होने लगता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अँक : 512	कुल पृष्ठ संख्या	समग्र अँक : 587
वर्ष : 43	44	समग्र वर्ष : 49

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2.	अनुक्रम		4
3.	भगवान् राम का राजेश्वरी-याग	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-15
4.	सत्यकाम का तप	पूज्यपाद-गुरुदेव	16-28
5.	देवता	पूज्यपाद-गुरुदेव	29-30
6.	अन्तरिक्ष में गति करने वाली नाडियाँ	पूज्यपाद-गुरुदेव	31-34
7.	ऋषियों के उद्‌गार	पूज्यपाद-गुरुदेव	35
8.	Conception of Yajna	Pujyapad Gurudev	36-37
9.	दान, पुस्तकों की सूची, प्राप्ति के स्थान व सूचना आदि		38-43

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है :-

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं.–0149000100229389, IFSC Code –PUNB–0014900

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

Website : www.shringirishi.in

Email : contact@shringirishi.in

।। ओ३म् ।।

भगवान् राम का राजेश्वरी-याग

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ ये पाठ्यक्रम परम्परागतों से ही माना गया है और यह मानवीय मस्तिष्कों में सदैव निहित रहा है। तो आज का हमारा वेदमन्त्रः उस परमपिता परमात्मा जो यज्ञमयी स्वरूप है याग उसका आयतन है, उसका गृह है और उसका सदन है और वह प्रायः उसी में वास कर रहा है। तो हम उस परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप है उसकी महिमा का सदैव गुणगान गाते रहें क्योंकि यह जो ब्रह्माण्ड रूपी यज्ञशाला है जो नित्यप्रति मानव के प्रकाश के द्वारा, कहीं शीतलता के द्वारा, नाना प्रकार की वनस्पतियों के द्वारा जो यह नाना रूपों में याग हमें दृष्टिपात आ रहा है। इस सर्वत्र याग का जो मूलन है वह परमपिता परमात्मा कहा जाता है। क्योंकि एक दूसरा एक दूसरे में निहित रहने वाला यह जगत है। तो जब हम यह विचारते हैं कि एक दूसरे में परणित होने वाला यह जगत् अपने में अनुपम कहलाता है। तो हम सदैव परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणवादन करते रहें।

रथ का स्वरूप

आओ मुनिवरो! देखो आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट नहीं करूँगा। केवल आज का हमारा वेदमन्त्र हमें कुछ उपगीत गा रहा है वेदाम् भूतम चित्रों रथाः क्या मुनिवरो! देखो एक अलंकारिक वार्ताएँ प्रगट होती रही हैं ऋषि-मुनियों की क्या एक रथ है उस पर विद्यमान होने वाले नाना ऋषि-मुनि हैं जिसमें एक यजमान है, होता, अध्वर्यु, उद्गाता और पुरोहित और ब्रह्मा मानो वह सर्वत्र उस रथ में विद्यमान

हैं और रथ में विद्यमान हो करके वह मानो देखो रथ को सुचारू रूप से गति दे रहे हैं। इसी प्रकार यह जो ब्रह्माण्ड है यह एक प्रकार का रथ है और मानो इस संसार को, रथ को गति देने वाले परमात्मा ब्रह्मा है, आत्मा यजमान है और इन पंच महाभूतों में मानो कोई उद्गाता है, कोई अध्वर्यु है और कोई मानो पुरोहित बन करके याग कर रहा है। तो यह जो रथ चल रहा है यह उसको गति देने वाले हैं और वह उसमें से गति, जो उसमें से तरंगों का जन्म हो रहा है वह तरंगें मुनिवरो! देखो तरंगित होने वाला वह सुगन्ध है जो प्रदूषण को समाप्त करने वाला है और जो सुगन्ध को मानो देखो अपने में धारण करता उसको त्याग रहा है। तो यह संसार एक महानता में परणित हो रहा है। तो जहाँ विचारों का समन्वय होता रहा है और मन मस्तिष्क को एकाग्र करके जब साकल्य को हुत करता है तो मानो देखो उसमें से विचित्र सुगन्धियों का जन्म होता है। जो अशुद्धियों को निगलता है और उसका शुद्धिकरण कर देता है।

नाना प्रकार के याज्ञिक

आओ मेरे प्यारे! देखो मुझे बहुत से ऋषि-मुनियों की वार्ताएँ स्मरण आती रहती हैं। मुझे बेटा! वह काल स्मरण आता रहा है जिस काल में मुनिवरो! देखो भगवान् राम ने याग किया था। मुझे वह काल भी स्मरण है परन्तु देखो जिस यागाम् भूतम् ब्रह्मा लोकाम् यहाँ नाना प्रकार के यागों का प्रायः वर्णन आता रहता है। वैदिक साहित्य में कहीं वृष्टि याग का वर्णन है तो कहीं धनुर्याग का वर्णन है, कहीं वाजपेयी याग का वर्णन है, तो कहीं अग्निष्टोम याग का वर्णन है और कहीं मुनिवरो! देखो पुत्रेष्टि यागों में वृष्टि यागों का व्यवधान किया गया है। तो नाना प्रकार के याज्ञिक अपने में याग करते रहे हैं। मेरे प्यारे! कहीं राजेश्वरी याग होता है।

याग की भूमिका

मुझे बेटा! स्मरण आता रहता है भगवान् राम के यहाँ बेटा! एक राजेश्वरी याग हुआ था और उस याग में मानो देखो नाना ऋषि मुनियों

का समूह एकत्रित हुआ। उसकी जो भूमिका बनी है वह ऋषि मुनि बेटा! उसमें एक समय महर्षि वैशम्पायन और महर्षि विभाण्डक, महर्षि श्वेताश्वेतर और भी नाना ऋषिवर बेटा! अपनी स्थलियों पर विद्यमान थे। तो महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज अपने आसन पर थे परन्तु देखो नाना ऋषि-मुनि अपने में विचार विनिमय करने लगे। तो मेरे पुत्रो! देखो महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज जो वायु गोत्रीय कहलाते थे। तो बेटा! देखो महर्षि वैशम्पायन अपने आसन पर विद्यमान थे और वह अपने में कुछ वेदमन्त्रों का उद्गीत गा रहे थे और उद्गीत गाते हुए अमृतम् ब्रह्मा लोकाम् अस्वतम् चित्रो। तो चित्रों की वार्ता का वर्णन आ रहा था। क्योंकि महाराजा अश्वपति के यहाँ वह याग करा करके अपने आश्रम में पधारे और आश्रम में बेटा! देखो रात्रि के काल में न्योदामयी मन्त्रों का उद्गीत गाने लगे। और वेदमन्त्र यह कहता है रथम् रथम् ब्रह्मा लोकाम् वाचस्सुता। मानो देखो यजमान यज्ञशाला में विद्यमान है और उसका रथ बन करके बेटा! देखो वह द्यु लोक को प्रवेश करता रहता है, द्यु लोक में गति करता है। तो मेरे प्यारे! देखो द्यु लोक में गति करने वाला और वह द्युऽम ब्रह्मा लोकाम् वह रथी उस्तम। वह जो रथ बनता है वह द्यु लोक में तरंगों पर अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके बेटा! गमन कर रहा है। तो मेरे पुत्रो! देखो ऋषि-मुनियों के हृदयों में जब यह वाक् समाहित हुआ क्या इन चित्रों को दृष्टिपात करना चाहिए। तो बेटा! महर्षि वैशम्पायन अपने में विचार-विनिमय करने लगे परन्तु देखो उन्होंने रात्रि का काल समाप्त हो गया प्रातःकाल हो गया। प्रातःकाल जब हुआ तो बेटा! अपने आसन को ऋषि नहीं त्याग रहा है।

उन्होंने महर्षि, मानो विभाण्डक मुनि महाराज का स्थान निकटतम था उन्होंने वृतिका ब्रह्मचारी से कहा हे ब्रह्मचारी दृष्टिपात करो ऋषि अपने आसन को नहीं त्याग रहे हैं। जब वृतिका ब्रह्मचारी उनके द्वार पर पहुँचे तो वह शान्त मुद्रा में कुछ वेदमन्त्रों के ऊपर अन्वेषण कर रहे हैं। उन्होंने कहा प्रभु आप आसन को क्यों नहीं त्याग रहे हैं? उन्होंने कहा वेदमन्त्र अमृतम् ब्रह्मा लोकाम् चित्रो रथाः। यजमान के चित्रों को

मैं प्रायः भली भाँति विचार रहा हूँ परन्तु विचारने में नहीं आ रहा है। बेटा! उन्होंने वे ही वाक् महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज से उद्गीत रूप में गाई। और महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज उनके द्वार पर आये तो विभाण्डक मुनि भी इसी वाक् पर विचार विनिमय करने लगे। मेरे प्यारे! देखो यह विचारने लगे परन्तु अपने में निपटारा नहीं हुआ।

ऋषि मुनियों का याग के लिए निर्णय

जब निपटारा नहीं हुआ तो कहीं से बेटा! ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी सुकेता, महर्षि भारद्वाज, महर्षि व्रेतकेतु नाना ऋषि-मुनियों का बेटा! एक समूह कहीं से भ्रमण करता हुआ ऋषि के आश्रम में आ पहुँचा। ऋषि से कहा तुम क्या विचार-विनिमय कर रहे हो? उन्होंने कहा प्रभु मैं—वेदमन्त्र कहता है रथम् ब्रह्मा यजनम् ब्रह्मे वाचन्नमम् ब्रह्मा द्यु लोकाम् व्रते वेदमन्त्र कहता है कि यजमान का रथ बन करके द्यु लोक में जाता है तो प्रभु मैं उस द्यु लोक वाले मानो देखो मैं रथ को दृष्टिपात करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा बहुत प्रिय! तो मुनिवरो! देखो ब्रह्मणे वह भी विचार विनिमय करने लगे। तो इतने में बेटा! विभाण्डक जी ने कहा कि मेरे विचार में यह आता है ऋषिवर क्या भगवान् राम के द्वारा चलो और अयोध्या में एक याग का निर्माण होना चाहिए और उसमें यह सब दृष्टिपात होगा।

अयोध्या के लिए गमन

मेरे प्यारे! देखो सब ऋषि मुनियों ने मध्य दिवस का समय था अपने कर्म को बनाया। तो बेटा! वहाँ से सब ऋषि-मुनियों का समूह भ्रमण करते हुए बेटा! देखो व्रेतम ऋषि महाराज के आश्रम में रात्रिकाल में विश्राम हुआ परन्तु प्रातःकाल होते ही मुनिवरो! उनका अयोध्या में गमन हुआ।

भगवान् राम का उपदेश

मुनिवरो! देखो अयोध्या में भगवान् राम का यह नियम था क्या उनके यहाँ एक यज्ञशाला थी जिसमें देखो भगवान् राम याग करते थे।

मेरे पुत्रो! देखो यज्ञशाला में भिन्न-भिन्न देखो आसनों पर ऋषि मुनि अपनी-अपनी कोटि के अनुसार आसनों पर विद्यमान हो गये। जब विद्यमान हो गये तो विचार-विनिमय होने लगा। मेरे प्यारे! भगवान् राम का उपदेश चल रहा था। उनका याग प्रातःकाल का सम्पन्न हो गया था और उनका विचार विनिमय चल रहा था और वह यह उच्चारण कर रहे थे कि यदि राष्ट्र को ऊँचा बनाना है तो राजा के राष्ट्र में प्रजा के मुखारबिन्दु से सुगन्धि आनी चाहिए और प्रत्येक गृह में सुगन्ध होनी चाहिए। **प्रत्येक गृह में पति और पत्नी याज्ञिक बने और बाल्य बालिका देखो विद्यालयों में ब्रह्मचारी याग करें।** इस प्रकार बेटा! भगवान् राम का उपदेश चल रहा था और यह उद्गीत गा रहे थे कि हे ब्रह्मवेत्ताओं आओ, हे राजवेत्ताओं आओ तुम अपने राष्ट्र में यह प्रसार करो कि हमारे यहाँ याग होना चाहिए। प्रत्येक गृह में याज्ञिक होना चाहिए क्योंकि देखो याग से राष्ट्र और समाज ऊँचा बनता है महानता को प्राप्त होता रहता है। इस प्रकार राम ने बेटा! देखो अपना उपदेश प्रारम्भ किया और उपदेश प्रारम्भ करके उन्होंने कहा राजा के राष्ट्र में मानो देखो सब प्रकार का व्यवधान होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो इतने में ब्रह्मणा अव्रतम् उनके उपदेश मञ्जरी समाप्त हुई।

ऋषि मुनियों का भगवान् राम द्वारा स्वागत

समाप्त होते ही मुनिवरो! देखो अमृतम् ऋषि-मुनियों को उन्होंने दृष्टिपात किया वह बेटा! देखो बारी-बारी भगवान् राम ने ऋषि मुनियों के चरणों को स्पर्श किया और उन्होंने कहा असुतम् ब्रह्मा कहो भगवन् आज बिना सूचना के ऋषि-मुनियों का आगमन कैसे हुआ? मुझे भगवन् सूचित करते मैं अपने पुष्प विमानों में अथवा वाहनों में ले करके देखो अपने गृह में उनका वास होता, यह हमारा बड़ा अहोभाग्य है। तो भगवान् राम जब इस प्रकार उद्गीत गाने लगे तो ऋषि मुनियों ने कहा नहीं कोई वारा व्रते। हे राम हम भ्रमण करने में बड़े प्रसन्न रहते हैं, अपने विचार विनिमय करते चले आते हैं। मानो देखो भगवान् राम ने कहा तो भगवन् कोई कार्य उद्गीत गाईये बिना कारण के तुम्हारे आगमन का कोई अस्तित्व मुझे दृष्टिपात नहीं आता।

महर्षि वैशम्पायन बोले कि प्रभु हम इसलिए मानो देखो तुम्हारे गृह में प्रवेश हुआ है हमारी यह इच्छा है कि तुम्हारे यहाँ एक याग होना चाहिए। भगवान् राम ने कहा प्रभु यह तो हमारा बड़ा अहोभाग्य है, हम बड़े भाग्यशाली हैं हम आपकी आज्ञाओं का पालन करें। तो उन्होंने बेटा! शिल्पकारों को निमन्त्रित किया और शिल्पकारों से कहा तुम यज्ञशाला का निर्माण करो। उन्होंने लक्ष्मण इत्यादि से कहा भरत से क्या ऋषि-मुनियों को, इनको अपने-अपने कक्ष में पहुँचाओ। तो बेटा! देखो ब्रह्मवेत्ताओं के कक्ष, ब्रह्मचारियों के कक्ष राजा के यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के अतिथिशाला में मानो कक्ष विद्यमान थे। मेरे प्यारे! देखो ऋषि मुनियों को वहाँ उनका वास कराया गया और कराने के पश्चात् मुनिवरो! देखो राम ने शिल्पकारों को आज्ञा दी और उन्होंने भव्य यज्ञशाला का निर्माण किया और नाना प्रकार का साकल्य एकत्रित हो गया।

याग का प्रारम्भ

मेरे प्यारे! देखो भगवान् राम ने कहा हे ऋषिवर आओ, तुम्हारी यज्ञशाला का निर्माण हो गया है और यज्ञ में सब साकल्य मानो उपस्थित है तुम याग प्रारम्भ करो। मेरे प्यारे! देखो सब ऋषि-मुनियों ने अपने आसन को त्याग करके और वह यज्ञशाला में पहुँचे। यज्ञशाला में बेटा! देखो उचित आसन पर विद्यमान हो गये। ब्रह्मा का स्थान महर्षि वैशम्पायन को ब्रह्मा का आसन नियुक्त किया गया। विमाण्डक मुनि महाराज उस मानो याग में उद्गाता बने और कोई ऋषि-मुनि मानो उनमें से उद्गाता बन करके उद्गीत गाने लगा, कोई अध्वर्यु बन करके द्रव्य का स्वामी बन गया। मेरे प्यारे! राम यजमान बने। **राम देखो और सीता दोनों अपने में यजमान बन गए** और यजमान बन करके उनके कथनानुसार ऋषि मुनियों का आगमन होने लगा। मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहा है जब याग का प्रारम्भ हुआ। याग प्रारम्भ होते ही बेटा! वेदमन्त्रों का उद्गीत गाने लगे और वेदमन्त्र में यह आया चित्रम् रथम् ब्रह्मा देवत्वाम् ब्रह्मे द्यु लोकाम् देवत्वाम् यजमानाः। यह वेदमन्त्र कह रहा था राम ने कहा हे ऋषिवर उद्गीत गाने वालो वेदमन्त्र यह कहता है

कि यजमान का रथ बन करके द्यु लोक को जाता है और मानो देखो रथ में ब्रह्मा विद्यमान हैं, होताजन हैं आत्माम् भूतम् ब्रह्मा चेतनावत हो करके यह द्यु लोक को यह रथ जा रहा है। तो प्रभु मैं इस रथ को मानो देखो साक्षात्कार दृष्टिपात करना चाहता हूँ।

महर्षि भारद्वाज का आगमन

मेरे प्यारे! देखो याग **अग्निहोत्र हो गया था** और वह याग देखो वही समाप्त हो गया। राम ने कहा कि मैं रथ को दृष्टिपात करूँगा। तो मेरे प्यारे! कोई ऋषि-मुनि ऐसा नहीं था जो उसका साक्षात्कार क्योंकि दर्शनों से घटित होने वाला विचार मानो देखो घटित हो रहा है परन्तु उसको साक्षात्कार कैसे दृष्टिपात कराया जाए। यह विचार-विनिमय हो रहा था इतने में बेटा! देखो महर्षि भारद्वाज भी वहीं आ पधारे अपने ब्रह्मचारी कवन्धि के द्वारा और ब्रह्मचारिणी शबरी के द्वारा। मेरे प्यारे! देखो अपने वाहन में विद्यमान हो करके यज्ञशाला में आ पहुँचे। राम से कहा हे राम तुम्हारा याग कैसे शान्त हो रहा है? उन्होंने कहा प्रभु यह वेदमन्त्र कह रहा है यजनम् ब्रह्मा यजनम् ब्रहे देवन्तम् ब्रव्हा यजमानम् ब्रव्हे हे यजमान ब्रहे देखो यजमान का रथ बन करके द्यु लोक को जाता है और यह द्यु लोक वाले रथ को मानो मैं साक्षात्कार दृष्टिपात करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा हे राम तुम ब्रह्मवेत्ताओं की परीक्षा तो नहीं ले रहे हो? उन्होंने कहा नहीं भगवन्! मेरे में इतनी शक्ति कहाँ है जो मैं ब्रह्मवेत्ताओं की परीक्षा लूँ क्योंकि मैं तो उनके चरणों की धूलिका अवृत करता रहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो जब उन्होंने ऐसा कहा तो भारद्वाज मुनि ने ब्रह्मचारी महर्षि पणपेतु और ब्रह्मचारिणी शबरी से कहा जाओ, कजली वन चले जाओ अपने वाहन को और देखो उसमें से यन्त्रों को लाया जाए। तो बेटा! देखो वाहन में विद्यमान हो करके वह मुनिवरो! देखो वह अमृतम् कजली वनों में पहुँचे। वहाँ से नाना यन्त्रों को उन्होंने अवृत किया और यन्त्र को ले करके यज्ञशाला में आ पधारे। शबरी ने कहा भगवन् यह आपका यन्त्र आ गया है।

चित्रों का द्यु में गमन करते हुए दर्शन

यन्त्र को उन्होंने बेटा! देखो स्थिर कर दिया और स्थिर करके उन्होंने कहा राम तुम याग प्रारम्भ करो। मेरे प्यारे! जैसे उन्होंने याग प्रारम्भ किया और याग में उन्होंने कहा प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा और उदानाय स्वाहा कह करके जब हुत का प्रारम्भ किया तो मेरे प्यारे! देखो स्वाहा के साथ में, वाणी के साथ में चित्र और चित्र के साथ में बेटा! देखो शब्द वह मुनिवरो! देखो यन्त्रों में विद्यमब्रहे वह अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके और मुनिवरो! वह द्यु लोक को देखो यज्ञशाला का चित्र बन करके वह द्यु में रमण करने लगा। और उन्होंने कहा राम यह दृष्टिपात करो चित्रों में इनके चित्र आ रहे हैं, यह दृष्टिपात करो तुम्हारा रथ द्यु लोक को जा रहा है। एक-एक शब्द में मानो देखो सर्वत्र विज्ञान निहित रहता है और यज्ञशाला मानो देखो अग्नि का विज्ञान केवल देखो शब्दों में निहित रहता है, तरंगों में निहित रहता है। तो मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहा है याग प्रारम्भ होने लगा परन्तु यन्त्रों में वह चित्रों का चित्रण होता रहा।

भारद्वाज मुनि ने कहा राम मेरे यहाँ ऐसे-ऐसे यन्त्र हैं क्या मानो चित्रावलियाँ यन्त्र हैं एक रक्त के बिन्दु में जिस मानव का रक्त का बिन्दु है उस मानव का एक-एक रक्त के बिन्दु में उनके चित्र दृष्टिपात आ जाते हैं। उन्होंने कहा मेरी यज्ञशाला में प्रायः इस प्रकार का देखो विज्ञान और देखो चित्रावली विद्यमान हैं। मेरे प्यारे! ऋषि बड़े प्रसन्न हुए और वैशम्पायन के हर्ष की कोई सीमा न रही। तो बेटा! मुझे स्मरण आता रहा है वह याग लगभग मुनिवरो! देखो **छः माह तक याग प्रारम्भ रहा** परन्तु छः माह तक वह चित्रों का दर्शन करते रहे नाना प्रकार के चित्र बेटा! चित्रों के रूप में प्रायः दृष्टिपात आ रहे हैं।

अहोभाग्य

मेरे पुत्रो! देखो एक स्थान उद्गाता का होता है जो उद्गीत गाता है स्वरों से गान गाता है वेदमन्त्रों का। एक अध्वर्यु का स्थान होता है पर्यायवाची शब्दों में वास्तव में देखो अध्वर्यु मन को कहा गया है

और अध्वर्यु नाम राजा का भी है और अध्वर्यु नाम याग में देखो जो द्रव्य का स्वामी है जो साकल्य का स्वामी कहलाता है वह यजमान बन करके बेटा! अपनी धाराओं में रत्त हो रहा है। मेरे पुत्रो! देखो वह याग सम्पन्न ब्रहे छः माह के पश्चात् वह याग सम्पन्न हुआ। परन्तु देखो जब प्रारम्भ से ही सम्पन्नता को गमन करने लगा तो बेटा! ऋषि मुनि अपनी उपदेश मञ्जरियों में तत्पर उन्होंने कहा राम मानो देखो तुम्हारा यह अहोभाग्य है जो तुम्हारे यहाँ ऋषि-मुनियों का आगमन हो रहा है और ऋषि-मुनि देखो अपने याग को सम्पन्न कर रहे हैं। मुनिवरो! देखो राम बड़े प्रसन्न हो रहे हैं। राम ने कहा प्रभु यह तो हमारा सौभाग्य है, इस अयोध्या नगरी का सौभाग्य है जहाँ ऋषि-मुनि इस प्रकार देखो यागों में सम्मिलित हो करके अपनी भावनाओं से याग को पवित्र बनाने वाले हैं। तो इस प्रकार बेटा! देखो राम का याग सम्पन्न हो गया।

याग की दक्षिणा और आशीष

उन्होंने नाना ब्रह्मवेत्ताओं को, ब्राह्मण समाज को उन्होंने गऊ और मुद्राएँ उन्होंने प्रदान कीं और उन्होंने देखो यजनम् ब्रहे वैशम्पायन ने कहा प्रभु मैं दक्षिणा चाहता हूँ और दक्षिणाम् ब्रह्मे बेटा! देखो यजमान की जो त्रुटियाँ हैं उन्हें जो दक्षिणा में प्रदान किया जाता है वह प्रायः दक्षिणा कहलाती है। द्रव्य तो उदर की पूर्ति के लिए दी जाती है परन्तु जहाँ दक्षिणा का प्रसंग आता है वहाँ देखो उसकी जो त्रुटियाँ हैं वह प्रदान करे वैशाम अग्नम् ब्रह्मा मानो देखो यजमान में कोई त्रुटि हो किसी से द्वेषारोपण करने वाला हो तृपण हो उन सबको त्याग देना चाहिए। तो मेरे प्यारे! देखो विचार आता है यह त्रुटियाँ कहलाती हैं। आचार्यों ने कहा है कि त्रुटियों का जो समूह है वह मेरे प्यारे! देखो हृदय है। हृदय में श्रद्धा होनी चाहिए और श्रद्धा में दक्षिणा होनी चाहिए मानव त्यागपूर्वक रहना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो हृदय दक्षिणा हृदय श्रद्धा श्रद्धा में दक्षिणा इस प्रकार मानव का मन मस्तिष्क एकाग्र हो करके अपने जीवन को महान बनाए।

मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा इसलिए प्रगट नहीं करूँगा केवल विचार विनिमय यह कि हे यजमान तेरी प्रतिभा महानता में यह उच्चारण

करके राम को अपना आशीष देकर के सब ऋषि-मुनि बेटा! देखो याग में अप्रतम् वहाँ से गमन करते हैं। राम भी अपने आश्रम को अपनी राज्य सभा को गमन करते हैं।

याग पर ऋषि मुनियों का पूर्ण अध्ययन

विचार-विनिमय क्या मेरे प्यारे! हमारे यहाँ यागों का बड़ा वर्णन है। वैदिक साहित्य में एक-एक वाक् को ले करके उन्होंने अपना-अपना मन्तव्य दिया है और याग अपने में बड़ा विचित्रत्व क्रियाकलाप है जिस क्रियाकलाप को ले करके मानव अपने में महानता का दर्शन करता है। तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें संक्षिप्त सा ही परिचय देने आया हूँ। आज मैं व्याख्या देने नहीं आया हूँ केवल विचार-विनिमय यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती का सदैव गुणगान गाते रहें और यह परमात्मा देखो यज्ञों में निहित रहने वाला है। यह संसार रूपी जो यज्ञशाला है इस यज्ञशाला में वह परमात्मा निहित रहता है क्योंकि याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है और वह उसी में वास करने वाला है। तो हम उस परमपिता परमात्मा की महती को सदैव विचार-विनिमय करते इस संसार सागर से पार हो जाएं। तो मेरे प्यारे! देखो आज का विचार क्या हमारे ऋषि-मुनियों ने याग के ऊपर बड़ा-बड़ा पूर्ण अध्ययन किया है, विशालता में अध्ययन किया उस अध्ययन की प्रतिक्रियाओं को हमारे यहाँ वेद के वाङ्मय में सदैव वह निहित रहने वाली प्रतिक्रियाएँ हैं जिसके ऊपर ऋषि-मुनि परम्परागतों से सृष्टि के प्रारम्भ से विचार-विनिमय करते चले आए हैं। तो मेरे प्यारे! आज का विचार-विनिमय क्या क्या आज के विचारों का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते इस संसार सागर से पार हो जाएं और याग जैसे क्रियाकलापों को हम सदैव अपने में निहित करते रहें। हमारे आध्यात्मिक याग और भौतिक यागों का दोनों का प्रायः वर्णन आता रहता है। मेरे प्यारे! देखो यह भौतिक याग है। **आध्यात्मिक याग** उसे कहते हैं जो मानो देखो अपनी इन्द्रियों के विषयों का साकल्य बना करके और उसकी अन्तरात्मा

में बेटा! जब वह हुत करता है आत्मा में आत्मा का दर्शन करता है चेतना का उसे भान होता है परमात्मा का दर्शन होता है तो बेटा! वह आध्यात्मिक याग कहलाता है।

याज्ञिक बनने के लिए प्रेरणा

आओ मेरे प्यारे! आज का विचार-विनिमय क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए—राम अपने में बड़े प्रसन्न हुए। राम का याग तो बेटा! प्रायः मुझे स्मरण आता रहता है। तो आज का वाक् अब यह सम्पन्न होने जा रहा है कल समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज मैंने तुम्हें यह संक्षिप्त परिचय दिया, विशेष चर्चा नहीं देने आया केवल यह क्या यजनम् ब्रह्मा यज्ञ ब्रहे क्या प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनना चाहिए। विचारों से याग करो, साकल्य के द्वारा याग करो या प्रातःकालीन यह उद्गीत गाओ कि प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा उदानाय स्वाहा इस प्रकार मुनिवरो! देखो समानाय कह करके हुत प्रारम्भ करना चाहिए। तो मेरे प्यारे! देखो यह आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा को जानते हुए सागर से पार हो जाएँ और नित्यप्रति अपने क्रियाकलाप में सदैव निहित रहें। तो यह आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् माऽम् प्राचीरथम् दिव्याः आपाऽम्।
ओ३म् रथम्माऽम् प्राचीरथम् दिव्याः माः विष्णुरथम् आपाऽम्।।
ओ३म् मनुमुरेवम् आप्याम् मधु मम वाचन्नमाः।
ओ३म् तनु गायनत्वा रथम् माऽम प्राची रथाः।।

दिनांक : 7 जुलाई, 1992
समय : प्रातः 9 बजे
स्थान : श्री ओमप्रकाश त्यागी ग्राम-कैन्दकी, सहारनपुर

।। ओ३म् ।।

सत्यकाम का तप

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गये हैं और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह परमपिता परमात्मा विद्यमान हैं। जड़ और चेतना में दोनों में वह निहित रहने वाले हैं। तो वह परमपिता परमात्मा हमारा अनन्तवान है और उसकी अनन्तता के ऊपर सदैव हम विचार विनिमय करते रहें। तो हमारा वेदमन्त्र कहता है विष्णु भविग् ब्रह्मा हे विष्णु तू हमारा कल्याणकारक है और उस विष्णु की हमें सदैव याचना करनी है जो हमारे जीवन का साथी है और मानव के अन्तर्हृदयों में जो प्रेरणा देने वाला है उस महान् देव की हम सदैव उपासना करते रहें। आओ मेरे प्यारे। मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में नाना प्रकार की चर्चाएँ की हैं। आज मैं उन चर्चाओं में तो तुम्हें नहीं ले जाऊँगा केवल विचार विनिमय यह कि हमारा **वेदमन्त्र हमें नाना प्रकार की प्रेरणा देता रहता है** और उसी प्रेरणा को प्राप्त करके अन्ततः प्रेरित होते रहते हैं और अपने जीवन को महान् बनाने में सदैव तत्पर रहते हैं जिससे हमारे जीवन की प्रतिभा एक महानता में सदैव निहित होती रहे।

सत्यकाम को वेदमन्त्रों से प्रेरणा

आज का हमारा वेदमन्त्रः यह कह रहा है यमम् ब्रह्मा विश्वस्तम ब्रहे। मेरे प्यारे! देखो एक समय जाबाला पुत्र सत्यकाम ने कहा था हे माता वेदमन्त्र का जब मैं अध्ययन करता हूँ तो वेदमन्त्र कहता है कि

ब्रह्म वर्चस्सुतम ब्रह्मा क्या हे अमृतम् अध्याणाम् भूते क्योंकि अध्ययनशील प्राणी अपने में यह विचारता है क्या (कि) मैं ब्रह्मवेत्ता बनूँ और ब्रह्मवेत्ता बनने की मेरी बड़ी उत्कृष्ट इच्छा रहती है। तो हे माता मुझे आज्ञा दो मैं ब्रह्मवेत्ता बनूँ, जाबाला पुत्र सत्यकाम ने कहा। जाओ पुत्रो वर्णस्सुते, जाओ तुम ब्रह्मवेत्ता बनो परन्तु आचार्य के कुल में पहुँचो और आचार्य से ब्रह्मवेत्ता बनने के लिए सदैव तत्पर हो जाओ। माता ने जब यह आज्ञा दी तो वह जाबाला पुत्र सत्यकाम उपयनन के पश्चात् वह अपने आचार्य कुल में जा पहुँचे।

महात्मा गौतम के द्वार पर पहुँचे। गौतम मम् ब्रव्हा देखो वह अपनी साधना में परणित थे। महात्मा गौतम ने कहा हे जाबाला पुत्र सत्यकाम तुम्हारा आगमन क्यों हुआ? उन्होंने कहा एक वेदमन्त्र का उद्गीत गाते हुए यमम् ब्रह्मा आत्माम् भूतम् ब्रह्मा क्या मैं आत्मा को पवित्र और आत्मा को मानो ब्रह्म में तल्लीन करना चाहता हूँ। मैं स्वयं मानो देखो ब्रह्मवत् बनना चाहता हूँ। जब यह वाक् उन्होंने कहा तो ब्रह्मणे व्रहा—जब गौतम ने यह वाक् श्रवण किया तो गौतम ने कहा आओ विराजो।

महात्मा गौतम का चिन्तन

वह विराजमान हो गये। परन्तु उन्होंने कहा ब्रह्मणा ब्रहे क्या हे ब्रह्मचारी तुम्हारा गोत्र क्या है? तो जाबाला पुत्र सत्यकाम ने कहा कि मम् ब्रहे यह माता जानती है, यह इस गोत्र को मैं नहीं जानता, मेरी माता जानती है। तो वह गौतम ने कहा तू तो ब्राह्मण है क्योंकि ब्राह्मण ही सत्यवादी वाक् उच्चारण कर सकता है। तो ब्रह्मवेत्ता बनने की तेरी जिज्ञासा है। जब महात्मा गौतम ने ऐसा कहा तो मुनिवरो! देखो वह रात्रि का समय था। सायँकाल को अपने-अपने कक्ष में जा पहुँचे परन्तु रात्रि समय जब निद्रा से जागरूक हुए तो महात्मा गौतम ने विचारा कि तुमने ब्रह्म उपाधि प्रदान की है, यह वास्तव में ब्राह्मण है अथवा नहीं। मेरे पुत्रो। जब उन्होंने यह विचार विनिमय करने लगे तो सत्ययाम भूयम् ब्रह्मे **वेद का वाक् कहता है कि जो सत्य उच्चारण करता है वह ब्रह्म को जानता है, वह ब्रह्म की जिज्ञासा वाला है** तो इसीलिए

यह अमृतम् ब्रह्मा यह अमृत को प्राप्त होगा। परन्तु तेरा कोई अधिकार नहीं कि अनायास तुमने एक उपाधि प्रदान की है ब्रह्मवेत्ता की। इसी चिन्तन में बेटा! प्रातःकाल हो गया और प्रातःकाल होते ही जाबाला पुत्र सत्यकाम उनके समीप आ गए।

सत्यकाम का गऊओं के साथ गमन

उन्होंने कहा हे पितर, हे आचार्य मुझे आज्ञा दीजिये मैं आपके चरणों की वन्दना कर रहा हूँ, मैं देवतावत् को जानना चाहता हूँ। उन्होंने कहा हे ब्राह्मण जाओ तुम, मैंने ब्राह्मण आपको कहा तो जाओ ये चार सौ गऊए हैं इन्हें यहाँ से ले जाओ और जब तक यह सहस्र नहीं हों मेरे आश्रम में नहीं आना। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम, चरणों की वन्दना करता हुआ ब्रह्मचारी सत्यकामम् ब्रह्मे गऊओं को लेकर के बेटा! वहाँ से गमन कर गये हैं और गऊएं जब वागम व्रते उसके पश्चात् जब ब्रह्मचारी है वह उसी के दुग्ध का पान करना और उसी के दुग्ध में देखो याग करते थे। जब वह प्रातः कालीन मानो सूर्य उदय हुआ और वह याग प्रारम्भ करते थे। परन्तु देखो उन्हें इसी प्रकार भ्रमण करते हुए मेरे पुत्रो! बहुत समय हो गया और गऊओं की सेवा करते चरणों की वन्दना करते। परन्तु जहाँ गौ नाम के पशु की सेवा का प्रसंग आया वहाँ यह देखो हमारी इन्द्रियों का प्रसंग भी आता है क्या इन्द्रियों को भी गौ कहा जाता है तो वह उनको संयम में लाना और पशु नाम के और मानो देखो अपने पशु को उज्ज्वलता देना है। मेरे प्यारे! देखो इसी प्रकार उन्हें जब बहुत समय हो गया तो एक समय प्रातःकालीन जैसे ब्रह्मचारी ने याग किया तो उनमें से एक वृषभ कहता है हे वृषभ, वृषभ ने कहा, बैल ने कहा, गऊ के बछड़े ने कहा हे ब्रह्मचारी सत्यकाम अब गुरु के आश्रम को चलो क्योंकि हम एक सहस्र हो गये हैं। गुरु की आज्ञा थी कि जब तक एक सहस्र गऊ नहीं हो जाए जब तक तुम मेरे आश्रम में नहीं आना। अब हम एक सहस्र हो गये हैं चलो गुरु के आश्रम को।

वृषभ द्वारा चार कलाओं का ज्ञान

मेरे प्यारे! देखो सत्यकाम बड़े प्रसन्न हुए और सत्यकाम ने जब यह अपने चलने के लिए अपना क्रियाकलाप बनाया तो वृषभ ने कहा

कि हे सत्यकाम मैं तुम्हें चार कलाओं का ज्ञान करा देता हूँ क्योंकि संसार में सोलह कलाएँ हैं उनमें से चार कलाओं का ज्ञान मैं कराता हूँ। सबसे प्रथम मानो प्राचीदिग और द्वितीय दक्षिणीदिग और तृतीय मानो प्रतीचीदिग् और उदीचीदिक् यह चार कलाएँ हैं तुम इनका चिन्तन करना प्रारम्भ करो। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने उनका निर्णय कराया क्या प्राचीदिग कहते हैं जो पूर्व में रहने वाली अग्नि का स्थान है और देखो द्वितीय दक्षिणायाम् व्रतम दक्षिणायम् इन्द्र का स्थान है और देखो प्रतीचीदिग् में देखो वरुण का स्थान है और मुनिवरो! देखो उत्तरायण में सोम का स्थान है। इस प्रकार मुनिवरो! देखो ऋषि ने अपना, उस वृषभ ने ब्रह्मचारी को अपना यह निर्णय दिया क्या मानो यह चार कलाएँ है जो प्राची में रहता अग्नि का स्थान है। एक अग्नि कला है और द्वितीय कला दक्षिण है जहाँ मानो देखो इन्द्र का स्थान रहता है, यहीं, **वहाँ देखो ब्रह्म का स्थान भी यहीं रहता है,** यह पितरजनों का स्थान है। तो इसी प्रकार तुम देखो अमृतम् और अव्रते वरूण कहते हैं जल को सोमम् ब्रह्मा व्रतम्। बेटा! वह वरूण है जिस वरूण को ले करके हम प्रायः अपने क्रियाकलापों में महान बनने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। तो मुनिवरो! देखो वरूणाय ब्रह्मा और मुनिवरो! देखो सोमाय व्रतम। सोम मुनिवरो! देखो सोम कहते हैं, जो ज्ञान है, विज्ञान है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा यह चार कलाओं का ज्ञान तुम्हें मानो देखो मैंने कराया है और अगला जो ज्ञान तुम्हें कराएँगे वह अग्नि देवता कराएँगे, अग्नि तुम्हें चार कलाओं का ज्ञान प्रदान करेगा।

मेरे प्यारे! देखो जाबाला पुत्र सत्यकाम ने कहा बहुत प्रिय। मेरे प्यारे! उनका अन्तरात्मा तृप्त होने लगा और ज्ञान और विज्ञान में क्योंकि उनकी बड़ी निष्ठा थी और वह कलाओं में प्रतिष्ठित होने वाले थे। मेरे प्यारे! देखो जब उन्होंने इस प्रकार वर्णन किया अमृताम् भूतम् ब्रह्मे लोकाम्। मेरे प्यारे! देखो पूर्व में अग्नि का स्थान है जो प्रकाश देता है सूर्य उसी से उदय होता है और मुनिवरो! देखो दक्षिणाय में इन्द्र का स्थान है जहाँ से मुनिवरो! देखो सोम का जन्म होता है। मुनिवरो! देखो इन्द्र अपनी शचि को ले करके गमन करता है। इसी प्रकार मेरे

पुत्रो! देखो अमृतम् प्रतीचीदिग् में यह अमृताम् भूतम् वरुण का स्थान जहाँ मुनिवरो! देखो मानव अपने देखो कृषक अपनी कृषि के लिए अपने में वरूण का स्थान लिए हुए होता है। इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो सोमाम् ब्रह्मे जहाँ ऋषि मुनि अपने में सोम की याचना करते हैं। हमारे यहाँ सोम की विवेचना करने वालो ने कहा क्या सोम नाम ज्ञान का है, सोम नाम साधना का है और सोम नाम मेरे प्यारे! देखो वह वायु मण्डल को पवित्र बनाने का नाम सोम कहा जाता है। तो इसीलिए मानव को सौम्यता को धारण करना चाहिए। तो इसीलिए सोम मेरे प्यारे! अग्नि है जो प्रकाश को देने वाली है वह सोम कहलाती है। तो हम सोमाम् भूतम् ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो उत्तराणाम् ब्रहे देखो उत्तरायण ही मानव के जीवन को महान बनाता है।

उत्तरायण की विवेचना

मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! त्रेता देखो द्वापर का काल त्रेता का काल। जब मुनिवरो! देखो भीष्म के जीवन की चर्चाएँ आती हैं क्या मैं अपने जीवन को उत्तरायण में त्यागूँगा जहाँ जब मुझे प्राचीदिग का स्थान हो जाएगा मानो देखो उदीची सोमाम् ब्रह्मा उदीची में सोम होता है और वह सोम का स्थान जब तक नहीं होगा जब तक उत्तरायण नहीं होगा। मानो देखो मेरा जीवन उत्तरायण होना चाहिए। हमारे यहाँ उत्तरायण के सम्बन्ध में भिन्न प्रकार की विवेचना मानी जाती है परन्तु जो वैदिक साहित्य की विवेचना है—वेदमन्त्रों के वाङ्मय में जब प्रवेश करते हैं वहाँ कुछ और ही प्राप्त होता है। वह एक अमृतम् देखो सोम ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो सोम का हमें सोम प्राप्त होता है और वह उत्तरायण से प्राप्त होता है, उदीचीदिक् से होता है। मेरे प्यारे! देखो अमृतम् भीष्म ने कहा था क्या मैं अपने जीवन को उत्तरायण बनाना चाहता हूँ उसके पश्चात् मैं अपने शरीर का अन्त करूँगा। मेरे प्यारे! देखो उत्तरायण का महारानी द्रोपदी ने एक समय ये कहा कि प्रभु उत्तरायण का क्या अभिप्राय है? उन्होंने कहा **उत्तरायण कहते हैं ज्ञान को** और जब तक मानव में ज्ञान नहीं हो जाए जब तक उसका जीवन उत्तरायण नहीं बनेगा। क्योंकि देखो अज्ञान का नाम तो दक्षिणायन है और वह अन्धकार

का स्थान है इसीलिए मैं अपने जीवन को सोम बनाना चाहता हूँ, मैं अपने जीवन को उत्तरायण में ले जाना चाहता हूँ। जैसे एक माह में दो पक्ष होते हैं एक मानो कृष्ण पक्ष है तो एक शुक्ल पक्ष। शुक्ल कहते हैं प्रकाश को और कृष्णाय कहते हैं अंधकार को। मानो मेरा जीवन भी शुक्ल पक्ष की भाँति होना चाहिए। मेरे पुत्रो! देखो जब उन्होंने कहा कि ब्रह्मणे हे प्रभु आप तो ब्रह्म की वार्ता कर रहे हैं। जब महारानी द्रोपदी ने यह कहा कि तुम तो ब्रह्म की वार्ता प्रगट कर रहो। उन्होंने कहा देवी मैं ब्रह्मवादी हूँ। उन्होंने कहा उस समय तुम्हारा ब्रह्मज्ञान कहाँ गया था जब मानो देखो सभा में दुर्योधन मेरे वस्त्रों को मानो मेरे शरीर से दूरी करना चाहते थे और नग्न करना चाहते थे तो उस समय तुम्हारा ब्रह्मज्ञान कहाँ था? तो मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा देवी मैंने उस समय राष्ट्र के अन्न को ग्रहण किया था और राष्ट्र का जो अन्न होता है उसका ब्रह्मज्ञान से कोई सम्बन्ध नहीं होता क्योंकि राष्ट्र का अन्न रजोगुण तमोगुण से सना हुआ अन्न होता है और वही सने अन्न को ग्रहण करके मेरी बुद्धि भी मोह ममता में भ्रमित हो रही थी।

मेरे प्यारे! देखो द्रोपदी शान्त हो गई और महाराजा अमृतम् देखो अपने उत्तरायण की याचना करने लगे और उन्होंने कहा कि हे देवी संसार में उत्तरायण हो जाना चाहिए जो मानव परमात्मा के समीप जाना चाहता है। मुनिवरो! देखो उत्तरायण का अभिप्रायः यह है क्या हमारे यहाँ सूर्य भी छः माह तक उत्तरायण में होता है और छः माह तक दक्षिणायन में होता है परन्तु देखो यह एक वर्ष का कृत कहलाया गया। परन्तु यहाँ वेदमन्त्र कुछ और ही कह रहा है। वेदमन्त्र कहता है अज्ञानाम् ब्रह्मा व्रतम् देवत्वाम् प्रकाशाम् भू अमृतम् देवाः—वेद का वाक् कहता है क्या यह जो मानो देखो शुक्ल पक्ष है यह मानव का जीवन एक प्रकाश का जीवन है और कृष्ण पक्ष का जो जीवन है यह मानो अंधकार का जीवन है तो मैं मानो देखो अंधकार को नहीं चाहता। मेरे प्यारे! देखो यह दो पक्ष मानव के वेदमन्त्र कहता है क्या इसमें मानव को अपने जीवन में प्रकाश में जीवन को लाना चाहिए। तो मेरे पुत्रो! विचार आता है क्या देखो यह तो समय की एक अवृत्ति कही जाती है परन्तु

जहाँ तक यह प्रसंग आता है कि उत्तरायण हमारे यहाँ प्रकाश है दक्षिणायण में अंधकार है और ज्ञान का नाम ही देखो उत्तरायण कहा जाता है। तो इसीलिए सोम को ग्रहण करने वाला अथवा वही तो मुनिवरो! देखो सौम्य कहलाता है, वही उदीचीदिक् कहलाता है। उदीची उत्तरायणम् ब्रह्मा क्रतम् उदेव्राहा यह उदय अमृतम् यह ज्ञान उदय होता है। ज्ञान मानो कहीं से उदय होता है और गृहण करने वाला मानो देखो शरीर में आत्मा विद्यमान है, जो इसे गृहण करता है अपने में उग्रता को धारण करता हुआ अपने में अपनेपन को ही विचारता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो इसका नाम उत्तरायण कहा जाता है।

उत्तरायण में जब मानव अपने शरीर को त्यागता है तो वह देव लोक में प्राप्त होता है। वह उत्तरायण कौनसा है जहाँ देवताओं का लोक है? मेरे प्यारे! उत्तरायण कहते हैं जो ज्ञान में जा करके शरीर को त्यागता है। जब उसे विवेक हो जाता है और यह संसार उसके लिए निष्क्रिय बन जाता है तो वह उत्तरायण उसका जीवन बन करके वह महानता को प्राप्त होता है। तो मेरे प्यारे! देखो उन्होंने अमृतम् यह उत्तरायण की विवेचना की और उदीचीदिक् सोमो इसी में सोम की प्राप्ति होती है। सोम कहते हैं बेटा! देखो जो ऋषि-मुनि अपने में सोम का पान करते हैं और जो साधकजन हैं वह परमपिता परमात्मा के अनन्य स्वरूप को जान करके उसी के लिए सदैव प्रार्थना करते रहते हैं वह मुनिवरो! देखो प्रकाश कहा जाता है। इसी प्रकाश को जो धारण करता है वह मानव इस संसार से पार हो जाता है। तो उत्तरायण और दक्षिणायन की चर्चाएँ मेरे प्यारे! देखो यह चार कलाएँ हैं जहाँ प्राचीदिग अग्नि का प्रसंग आता है वहाँ प्रकाश है और मुनिवरो! देखो दक्षिणीदिग वरूणो ब्रह्मे जहाँ वरूण का वर्णन है क्या यह वरूण ही हमारा जीवन है हम इसी में रत्त रहना चाहते हैं। तो यह वार्ता बेटा! देखो अपने में उच्चारण करके अन्त में मौन हो गये और वह दोनों अपने में मौनता को धारण करने लगे।

मेरे प्यारे! देखो वृषभ ने, उन्हें गऊँ के बछड़े ने चार कलाओं का ज्ञान कराया। उन्होंने कहा यह चार कलाएँ हैं सबसे प्रथम प्राचीदिग

जो अग्नि का स्थान है और द्वितीय दक्षिण का स्थान है जहाँ इन्द्र रहता है इन्द्र का वास है और उदीची में रहने वाला मंगलम् ब्रह्मे सोमम् ब्राहा बेटा! देखो वही तो अपने में अभ्यस्त हो रहा है। वही जानना चाहता है कि जिज्ञासाम् भूतम् यह परमात्मा का जो अमूल्य जगत् है यह क्या है? तो इसके ऊपर बेटा! मानव अपने में प्रायः अनुसन्धान करता रहा है अथवा विचार विनिमय करता रहा है।

अग्नि देवता द्वारा चार कलाओं का ज्ञान

आओ मेरे प्यारे! विचार मैं दूरी नहीं ले जा रहा हूँ। सत्यकाम ने, बेटा! देखो वृषभ, गऊ के बछड़े से यह प्रेरणा ले करके वहाँ से अगले दिवस प्रातः कालीन देखो वह स्नान करने के पश्चात् उन्होंने एक वाणी उद्गीत रूप में गाई गई वैखरी रूप में क्या मैं तुम्हें चार कलाओं का ज्ञान कराऊँगा। क्योंकि **अग्निहोत्र के द्वारा ही उसे प्रेरणा प्राप्त होती थी।** तो बेटा! जैसे अग्निहोत्र किया उन्होंने कहा हे देव तुम ब्रह्मणे व्रताः मानो देखो उसी आभा को मैं नहीं जान पा रहा हूँ जिस आभा से आपका समन्वय रहता है। तो मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण आता रहा है क्या वह अमृतम् द्वितीय चार कला जो उन्होंने याग किया याग करने के पश्चात् उन्होंने कहा मैं, अग्नि देवता ने हे सत्यकाम मैं तुम्हें चार कलाओं का ज्ञान कराता हूँ। उन्होंने कहा बहुत प्रिय। तो उन्होंने मुनिवरो! देखो चार कलाओं का ज्ञान देना प्रारम्भ किया। उन्होंने कहा सबसे प्रथम चार कलाओं में देखो अमृतम् सबसे प्रथम विष्णु कला ध्रुवम् ब्रह्मा व्रत्यम् देवत्वाम् लोकाः **ध्रुवा और ऊर्ध्वा और पृथ्वी कला और अन्तरिक्ष कला यह चार कलाएँ हैं जिन कलाओं को जान करके मानव अपनी आभा को प्राप्त करता है।** जिन कलाओं को जान करके ही मानव इस संसार में अपने ज्ञान से नगण्य नहीं रहता, ज्ञान से कटिबद्ध रहने वाला यह मानवीयत्व कहलाता है। तो इस प्रकार मुनिवरो! देखो ऋषि ने अपना अमृताम् भूतपप्रव्हा अपने लोक की चर्चाएँ कीं और लोकप्रियता की चर्चा करने के पश्चात् उन्हें अपना उद्गीत गाया। ब्रह्मणे रासवतम् चार कलाओं का ज्ञान कराते देखो उन्होंने कहा हे ब्रह्मणे चार कलाओं में सबसे प्रथम कला का नाम ध्रुवा कला है।

ध्रुवा-कला

ध्रुवा कहते हैं जो मुनिवरो! देखो नम्र हो करके गमन करता है, जो निरभिमानी हो करके गमन करता है वह ध्रुवा में रहता है और ध्रुवाम् विष्णु ब्रह्मणे वही विष्णु है क्योंकि विष्णु ही तो पालन करने वाला है और वह ध्रुवा में रहता है। मेरे पुत्रो! देखो ध्रुवाम् विष्णु ब्रह्मणा ये ध्रुवा में विष्णु रहता है विष्णु की याचना करनी चाहिए। तो मेरे पुत्रो! जितना मानव नम्र होगा, जितना मानो निरभिमान होगा, अभिमान की मात्रा नहीं होगी उतना मानव अपने में महानता को प्राप्त करता रहेगा, उज्ज्वलता में रत्त रहेगा। तो विष्णु ही तो मुनिवरो! पालन करने वाला ही तो नियंता है वही तो ध्रुवा में रहता है जैसे मानो देखो वृक्ष पर फल आने के पश्चात् वह मानो देखो वह शान्त हो करके और अपने में शब्दावृत्ति हो जाता है। परन्तु इसी प्रकार यह सबसे प्रथम चार कलाओं में से एक कला का नाम मैंने उद्गीत रूप में गाया है और उन्होंने अमृतम् ब्रह्मा देवत्वाम् अभ्यम् ब्रह्मे विष्णु वह विष्णु जो कल्याण कारक है, जो विष्णु हमारे देवताजन भी मानो इसकी उपासना करते रहे हैं। तो मानो देखो ध्रुवा में विष्णु रहता है क्योंकि ध्रुवा में पालन होता है। जब माता-पिता मानो देखो उनकी सन्तान रूपी फल उत्पन्न हो जाते हैं तो माता-पिता दोनों मानो नम्र हो जाते हैं। तो जब नम्र हो जाते हैं तो वह ध्रुवा कहलाता है जैसे वृक्ष पर फल आने से मानो वृक्ष ध्रुवा में गमन करते हैं इसी प्रकार मानव भी ध्रुवा में गमन करता है। ध्रुवाम् भूतम् ध्रुवम् ब्रह्मे हे मानव तु ध्रुवा के आँगन में चल क्योंकि ध्रुवा कहते हैं जो नम्र हो करके गमन करता है। जैसे परमात्मा नम्र है परमात्मा मानो ध्रुवा में, ध्रुवा में रहने वाला है तो इसीलिए गमनन्तम गमनम् ब्राहाः। तो मुनिवरो! देखो वह अपने में गमनता को प्राप्त नहीं होता। तो विचार आता है मुनिवरो! देखो वही तो नियंता है जो निरभिमानी है, ज्ञानी है, जो परमात्मा के सन्निधान से अपने जीवन को व्यतीत कर रहा है। तो मेरे पुत्रो! देखो ध्रुवाम् विष्णु, हे विष्णु देखो हमारे वैदिक साहित्य में विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। विष्णु नाम बेटा! देखो राजा का नाम भी है। राजा जब प्रजा का पालन करता है तो

राजा को विष्णु कहते हैं। माता का नाम विष्णु है क्योंकि माता ही तो विष्णु रूप में पालन कर रही है और वही तो मानो देखो अनुशासन में लाने वाली है और वही त्यागा प्रवृत्ति में उसे महान बना रही है। तो माताम् भूतम् ब्रह्म लोकाम् वाचस्सुते। मेरे प्यारे! देखो वह ध्रुवा में अमृतम् माता भी ध्रुवा में रहती है क्योंकि वह पालना में और विष्णु कहलाती है। विष्णु ध्रुवा में यह ना मानो निरावृत्ति कहलाता है। तो मुनिवरो! देखो अनुशासन जब बाल्य पर माता अपना करती है तो वह मुनिवरो! देखो अनुशासन में अपने स्वाभिमान से ऊर्ध्वा बनाती है। तो विचार विनिमय क्या मेरे प्यारे! देखो ध्रुवाम् ध्रुवम् ब्रह्मा लोकाः वह परमात्मा ध्रुव है वह अखण्ड रहने वाला है परन्तु आत्मा ध्रुवा है यह भी ध्रुव के लिए सदैव शान्त होना चाहिए परन्तु देखो इस प्रकार ध्रुवाम् ध्रुवम् ब्रह्मा लोकाः। मेरे प्यारे! देखो ध्रुवा में कौन गमन करता है—वह माता-पिता करते हैं। प्रत्येक माता-पिता यह चाहते हैं हमारा गृह स्वर्ग बन जाए, हमारे गृह में महानता का साम्राज्य हो जाए। तो बेटा! देखो यह ध्रुवाम् देखो ध्रुवा में राजा रहता है वह पालन करता है। ध्रुवा में मानो देखो माता रहती है जो पालन करने वाली है तो इसी प्रकार ध्रुवाम् ध्रुवम् ब्रह्मा लोकाम्। हे मानव तू ध्रुवा में गमन कर, तू नम्र हो करके गमन कर देखो मानो जैसे वृक्ष पर मानो वृक्षाणी देखो फल आने के पश्चात् नीचे को नियन्ता जाता है इसी प्रकार माता-पिता भी नम्र बन जाएँ। पितृ भी नम्र बन करके देखो गमन कर जाएँ। तो मुनिवरो! देखो ऋषि ने कहा कि ध्रुवा में गमन किया जाए। तो जितना मानव ध्रुवा में रहेगा, नम्र रहेगा उतना जीवन उज्ज्वलता को प्राप्त होता रहेगा।

चन्द्र-कला

मेरे प्यारे! देखो उन्होंने द्वितीय कला का उन्होंने वर्णन करते हुए कहा चन्द्रम् ब्रह्मा ये चन्द्र-कला है। बेटा! देखो चन्द्रमा अपनी सोम्यता को ले करके गमन करता रहता है और वही चन्द्रमा मानो देखो सोम की वृष्टि करने वाला है। माता के गर्भस्थल में वही सोम की वृष्टि करता है, कृषक की भूमि में वही सोम की वृष्टि करता है परन्तु सोमाम् भूतम् सोमाम् देवत्वाम् सोमम् ब्रह्मणा लोकाम् वाचस्सुतम देवत्वाम् लोकाः।

मेरे प्यारे! देखो सोम अपने में सौम्यता को प्राप्त करता रहता है वह चन्द्रमा से प्राप्त होता है। चन्द्रमा हमें अमृत के देने वाला है और वही हमारे जीवन को ऊर्ध्वा में गमन कराने वाला है। मेरे प्यारे! इसका समन्वय समुद्रों से रहता है उसी का समन्वय ध्रुवा से, पृथ्वी से रहता है। तो मेरे प्यारे! यही तो सोम का कृत कहलाया जाता है तो इसीलिए हमारे यहाँ ऋषि ने कहा क्या यह ध्रुवा चन्द्र कला है जिसको जान करके मानव सोमता को प्राप्त होता है, जिसको जान करके लोक लोकान्तरों की माला को गिनना जानता है। मेरे प्यारे! देखो सूर्य-कला चन्द्र-कला—चन्द्रमा ही तो है जो सोम की वृष्टि करता है। कृषक इस पृथ्वी के गर्भ में बीज की स्थापना करता है परन्तु चन्द्रमा उसे सोम दे करके उज्ज्वल बना देता है। इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो यह चन्द्रम् ब्रह्मा यह चन्द्रमा है जिसका समन्वय समुद्रों से रहता है। जलों से उत्थान होता है जल का उत्थान बेटा! अपने में सिंचन करता है और वही वृष्टि के मूल में प्रारम्भ होता है। तो मेरे पुत्रो! विचार-विनिमय क्या कि हम सोम को जानने का प्रयास करें। सोम ब्रह्मा व्रतम् देवाः हे मानव तू सोम कहलाता है, सोम की याचना कर। तो मेरे पुत्रो! इस प्रकार ऋषि—उन्होंने अपना वर्णन किया और वर्णन करते देखो ब्रह्मचारी अपने में मौन हो गये।

पृथ्वी-कला

मुनिवरो! देखो उन्होंने तृतीय कला में जब पहुँचे तो तृतीय कला का नाम ध्रुवा ऊर्ध्वा और मुनिवरो! देखो पृथ्वी कला अपने में पृथ्वी कला कहलाती है जिसके गर्भ में नाना प्रकार के व्यञ्जनों का जन्म होता है जो नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ हमें प्रदान करती रहती है वह माता देखो अमृतम् अमृत को प्राप्त कराती रहती है। तो विचार आता है अमृताम् देवत्वाम् देवो ब्राह्मणा वर्णस्सुते देवाम् भूतम् ब्रह्मा। तो मेरे प्यारे! देखो यहाँ विष्णु की याचना करते हुए यह कहा कि ध्रुवा में चन्द्रमा की उपासना करने वाला चन्द्र अमृतम् अमृत में और मेरे प्यारे! देखो यह जो पृथ्वी है यह नाना प्रकार के खनिज और खाद्य को प्रदान करने वाली है। जब वैज्ञानिकजन इसके गर्भ में जाते हैं तो मुनिवरो! देखो इसके गर्भ में

से नाना प्रकार का खाद्यान्न और खनिज उसको खनिज को जन्म देने वाली है वही तो पृथ्वी है जो मानो गुरुत्व को लिए हुए सृष्टि का अवधान कर रही है। तो मेरे प्यारे! देखो ममत्वाम् भूतम् ब्रह्मा लोकाम्। वेद का मन्त्र कहता है क्या वह ध्रुवा में मानो पृथ्वी में गमन करने वाली अमृतता को प्राप्त अपना अस्तित्व नहीं रहता। तो मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने जब यह ब्रह्मचारी ने अपना चिन्तन दिया अमृत को प्राप्त किया।

अन्तरिक्ष-कला

मेरे प्यारे! देखो चतुर्थ जो कला है वह अपने में बड़ी विचित्र है जैसे अन्तरिक्ष कला है जहाँ अन्तरिक्ष में बेटा! सब शब्दाय शब्द भी उसी में निहित हो जाते हैं। मेरे प्यारे! अन्तरिक्ष में नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की एक माला बनी हुई है और वह लोक अपने में लोकान्तरों को देवरेष्तका को प्राप्त करा रहे हैं। तो विचार आता रहता है बेटा! यह जो अन्तरिक्ष कला है इसमें नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की बेटा! माला है। एक समय जालवी ऋषि से यह प्रश्न किया गया क्या महाराज यह क्या है? तो उन्होंने अन्तरिक्ष को कहा यह अन्तरिक्ष कला है। अन्तरिक्ष, इसमें जब तुम गणना करने लगोगे तो कहोगे यह पृथ्वी मण्डल है और यह सूर्य मण्डल है और यह ध्रुव मण्डल है यह आरूणी मण्डल है और यह नाना देखो पुष्य नक्षत्रों की गणना होने लगी और गणना करते-करते मुनिवरो! इतने सूक्ष्मतम रहस्य में पहुँच जाओगे क्या ये पृथ्वी अपने में प्रथाम् भूतम् बन करके मेरे प्यारे! मानव को प्रकाश में ला देती है। तो विचार विनिमय क्या मुनिवरो! वह अमृतम् अन्तरिक्षाम् भूतम् कलामभूते व्रताः यह अन्तरिक्ष कला है जिस कला को ले करके मानव अपने में गमन करता रहा है जिस मानो देखो सोम को ले करके सोम को अपने में धारण करता रहा है।

विचार आता रहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए बेटा। देखो इन कलाओं के ऊपर विचार विनिमय करें। यह मुनिवरो! देखो यह ध्रुवा कला है जिस कला को लेकर इसको पृथ्वी कहते हैं। जब वैज्ञानिकजन इसके गर्भ में जाते हैं तो कहीं खाद्य तप रहा है कहीं खाद्यान्न कहीं मानो देखो खनिज तप रहा है। तो वह खनिज कहीं सूर्य की किरणों के साथ

तप रहा है कहीं चन्द्रमा की कान्ति के साथ तप रहा है, कहीं मानो देखो इसी प्रकार वायु का व्यवधान हो रहा है, कहीं अग्नि उसे तपायमान कर रही है। तो मेरे प्यारे! देखो इसी प्रकार मानव सदैव अपनी-अपनी आभा में सम्मिलित रहता है, विचारता रहता है, गति करता रहता है। तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ मैं तुम्हें केवल देखो इन कलाओं का ज्ञान पूर्ण रूपेण नहीं केवल तुम्हें परिचय कराने के लिए आया हूँ। और परिचय क्या है क्या मुनिवरो! देखो इन कलाओं को जानने का प्रयास करें क्या और जान करके ही अपने जीवन को उज्ज्वल बनाए जिससे हमारा जीवन एक महानता की ज्योति को प्राप्त हो जाए। तो बेटा! देखो यह आज का वाक् अब सम्पन्न होने जा रहा है और चार देखो यह जो आगे की कलाएँ हैं इनका वर्णन मैं किसी द्वितीय काल में प्रगट करूँगा।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः ये क्या मुनिवरो! देखो हमारा जीवन उत्तरायण में रहना चाहिए। हमारे जीवन में एक महानता और ज्ञान का प्रकाश रहना चाहिए और परमात्मा की महती और उसके ज्ञान और विज्ञान को अपने में धारण करते रहें। तो यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए **हम अपने में अपनेपन में ही समाहित होते रहें और जानते रहें कि हमारा जीवन क्या है।** हम मानो देखो अपने जीवन को उत्तरायण में ले जाएं और दक्षिणायन में न ले जाते हुए हम मानो देखो अपने को उत्तरायण में, प्रकाश में ले जाएं। यह है बेटा! आज का वाक्, अब समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः आभ्यांमना रथम् वाचस्वर्णनम् ब्रह्मा आपाऽम्।
ओ३म् दिव्याम् भूययश्चम् प्रथमाम् रीवा घ्राणनत्वाः।।

दिनांक : 14 जुलाई, 1992
स्थान : ग्राम धनौरा, मेरठ

।। ओ३म् ।।

देवता

प्रत्येक वेदमन्त्र, उस (परमपिता परमात्मा) के सम्बन्ध में विचार और विज्ञान की धाराओं को रत्त कराता रहता है। इसीलिये प्रत्येक वेदमन्त्र के ऊपर हमारा अधिपत्य होना चाहिए और हृदय में, गर्भ में, जो देवता का उद्बोधन हो रहा है, उस देवता को जानना चाहिए। वह सर्वत्र जो देवत्व है, जहाँ देवता का वर्णन आता है वहाँ देवत्व मानो उस देवता का वर्णन आता है जो संसार का नियन्ता है अथवा निर्माण करने वाला है। और जो भी उस सम्बन्ध में जो अपना निर्माण करता है, वही देवता कहलाता है। मानो सबसे पहले जो देवता है वह तो परमपिता परमात्मा है। वह रचनाकार है, देवत्व है, परन्तु दूसरे रूप में जो देवता का वर्णन आता है, तो किसी का देवता अग्नि है, किसी का वायु है, मानो किसी का देवता पृथ्वी है, तो किसी का आपोमयी है। वह सब देवता इसलिये कहलाते हैं, क्योंकि वह भी निर्माण में सहायक बनते हैं। और **जो भी निर्माण में सहायक बनेंगे वही देवता हैं।** इसी प्रकार आचार्यजन भी देवता हैं, पितृजन भी देवता हैं क्योंकि वह निर्माण में सहयोगी बने हुए हैं। तो यहाँ परमपिता परमात्मा का नाम देवता है क्योंकि वह निर्माण करता है।

बेटा! वेद की एक आख्यायिका जो उद्गीत रूप में गान गा रही है उसके सम्बन्ध में, उसको हम वर्णन कर रहे हैं। हम देवता की उपासना करें, देवता को जाने और उसको विचारें। उस देवता के अनुकूल अपने जीवन को बनाने का प्रयास करें, हम भी सहायक

बनें निर्माण में। प्रभु का रचाया हुआ यह जो अनुपम जगत है मानो इस जगत में जो भी रचना कर रहा है, जो विचार दे रहा है वह सब देवत्व कहलाते हैं। तो आओ, हम देवता की उपासना करें, देवता के समीप उपस्थित हो कर उसकी सुगन्ध को अपने में धारण करें। उसके जो क्रियाकलाप हैं, उन क्रियाकलापों को अपने में, अपने अन्तर्हृदय में हम चिन्तन करते रहें जिससे बेटा! हम देवता बन जायें। क्योंकि देवता जैसे अग्नि देवता जैसा तेज आना चाहिये। जल देवता है शीतलता आ जाना चाहिये, पृथ्वी देवता है, गुरुतव आ जानी चाहिये। आकर्षण शक्ति आ जानी चाहिये। देखो वह जलो अप्रतम्, वायु देवता है तो हमारे हृदयों में विशुद्ध गति आ जानी चाहिये। अन्तरिक्ष से हमारे हृदय में आकाश होना चाहिये, गमन करने के लिए, क्रिया करने के लिए। वह सब, अन्तरिक्ष देवता दृड़तः उसमें हम गमन करने लगते हैं। तो देखो, यह सर्वत्र एक प्रकार की वैदिक साहित्य में अख्यायिकायें हैं और मानव दर्शन को जानने के लिये मानव को अपने ही मानवत्व को जानना है, दर्शन में जाना है। जब मानव दर्शन में चला जाता है तो वह दार्शनिक बन करके अपनी आभा का उसमें अभ्योदय होता रहता है। तो आओ मुनिवरो! हम परमपिता परमात्मा को अपना देव मानें और भी नाना प्रकार के देवता रूपों में हम अपने को उज्ज्वल और स्वच्छ बनाते रहें जिससे हमारा जीवन एक महान बन जाये।

पूज्यपाद-गुरुदेव

प्रवचन — दिनांक : 2 नवम्बर, 1988

।। ओ३म् ।।

अन्तरिक्ष में गति कराने वाली नाड़ियाँ

उसके पश्चात् उन्होंने एक समय यह विचारा कि मेरे मस्तिष्क में क्योंकि मैं मानव हूँ। मानव के मस्तिष्क में ऐसी कौन सी बाहक नाड़ी है जिन नाड़ियों से वह लोकों को जानता है? तो हमारे ऋषि-मुनियों ने, वेद के आचार्यों ने बहुत अनुसन्धान किया। ब्रह्मचारी कवन्धि और मुनिवरो! महर्षि रेवक दोनों जिज्ञासु थे। गणेश जी ने उनसे प्रश्न किया कि महाराज! मैं यह जानना चाहता हूँ कि मेरे मस्तिष्क में, क्योंकि जैसे एक वृक्ष है और वृक्ष ऊर्ध्वा में कहलाता है। वृक्ष की ऊर्ध्वा गति है। वृक्ष की नीचे को जड़ होती है। ऐसे ही **मानव की जड़ ऊर्ध्वा कहलाती है।** इस ऊर्ध्वा जड़ में कौन सा परमाणु कौन सा तत्व है? कहाँ वह नाड़ियाँ रहती हैं जिससे मानव अन्तरिक्ष में गति करता है। तो मेरे प्यारे! महाराजा गणेश जी रेवक मुनि और कवन्धि का विचार विनिमय होने लगा। परन्तु यह विचार जब नहीं आ पाया तो उस समय यह महाराजा शिव के द्वार पर पहुँचे। माता पार्वती और शिव दोनों विद्यमान थे। उनका कुछ चिन्तन चल रहा था। जो चिन्तन करने वाले होते हैं वह बहुत गम्भीर, सूक्ष्म तरंगों में चले जाते हैं।

तो मेरे प्यारे! ब्रह्मचारी कवन्धि और रेवक मुनि दोनों ने एक स्वर में कहा, हे प्रभु। हम जाना चाहते हैं, यह कौन सा ध्यान कहलाता है, जिससे मानव लोक-लोकान्तरों की तरंगों से तरंगित होता रहता है? कौन सी ऐसी आभा है? मेरे प्यारे! उस समय उन्होंने कहा कि यह पार्वती से प्राप्त किया जाए। पार्वती से प्रश्न करने लगे। हे मातेश्वरी! आपके यह पुत्र गणेश जी हैं जो वैज्ञानिक हैं यह लोकों की यात्रा करने वाले हैं। सदैव अनुसन्धान करते रहते हैं। परन्तु हम यह जानना चाहते हैं कि यह कौन सी आभा है जो इस प्रकार रमण करती रहती है? उन्होंने कहा हे ऋषि मुनियों तुम्हें यह प्रतीत है कि हमारे यहाँ सृष्टि

के प्रारम्भ के पश्चात् ऋषि-मुनियों ने एक विधान बनाया अथवा एक आभा में परणित हुए तो उस आभा में यह निर्णित हुआ कि आभा में रमण करने वाली जो तरंगे होती हैं जो लोकों में रमण करती हैं परन्तु इसका समन्वय क्योंकि हमारे ऋषि-मुनियों ने जब संविधान बनाया तो उन्होंने निर्माण करते हुए, निर्णित करते हुए, एक ही वाक्य कहा है उस समय सम्भूतिमः त्रिंष्टकेतु' इन शब्दों का प्रतिपादन किया। परन्तु उन्होंने मानव के माता के गर्भस्थल से ले करके मृत्यु तक इस मानव जीवन के सोलह प्रकार के सँस्कारों की गणना की और **वह सँस्कार क्या हैं? जो सँस्कार अपने हृदय से दूसरों के हृदय में प्रदान करते हैं।**

माता जब अपने बालक को अपने हृदय की प्रेरणा बालक के हृदय में परणित कर देती है जैसे मंगलम् ब्रह्मः मंगलम् देवस्तः मंगलमयी कामनाएँ होती हैं। मंगलाचरण करती हुयी, अपने हृदय की तरंगें बालक के हृदय में प्रवेश कर देती हैं। क्योंकि वह विज्ञान माताओं के समीप होता है। कुछ अनायास भी आ जाता है। नक्षत्रों की आभा से। इसी प्रकार **जन्म एक सँस्कार होता** है, स्थलियों में रमण करने वाला है। उसके पश्चात् **सँस्कारोपण सँस्कार** होता है। परन्तु देखो वह नोचन जो सँस्कार है उसमें एक आभा की तरंगें आती रहती हैं। परन्तु वह माता के गर्भस्थल में जो निर्माण होता है बालक का, उस बालक के जो केश होते हैं उन केशों के निचले भाग में एक से एक सूक्ष्म नाड़ियाँ होती हैं, और उन नाड़ियों का सम्बन्ध ऊर्ध्वा होता है। जैसे पृथ्वी तल पर तरंगें होती हैं इसी प्रकार इन महाकृतियों में नाना प्रकार की केश के निचले भाग में एक ब्रह्मरन्ध्र कहलाता है उस ब्रह्मरन्ध के जितने भी केश होते हैं उन केशों में उनके नीचे जितनी नाड़ियाँ हैं, ब्रह्मरन्ध्र के ऊर्ध्वा भाग में उन सबका समन्वय लोक-लोकान्तरों से होता है।

परन्तु यदि कोई मानव उन नाड़ियों को जागरूक करने वाला हो। जागरूक कैसे होती है? सूक्ष्म चिन्तन से। और वह चिन्तन जितना सूक्ष्म होता है, वह चिन्तन जितना आत्मीयता से समन्वय होता है उतना प्राण

से उसका समन्वय विशेषतर होता है, ब्रह्मरन्ध्र की नाड़ियाँ सर्वत्र जागरूक हो जाती है। तो जागरूक हो करके इसीलिए बुद्धिमान जब माता के गर्भ से पृथक होता है तो आचार्य, बुद्धिमान वेद के ज्ञान को ले करके, वेदमन्त्र को ले करके, क्योंकि जो देवताओं की भाषा है अथवा देवताओं का जो एक मार्ग है, उस ज्ञान को ले करके पुरोहित उस बालक का उत्थान करता है। जब केशो का नोचन करता है। परिणाम क्या? बेटा! मैं आज इस विचार को देने के लिए नहीं आया हूँ। विचार केवल यह माता पार्वती का चिन्तन कितना ऊर्ध्वा में रहा है। वह नोचन करती है। **केशों में माता अपने श्वांसों की गति देती रहती है।** जब ब्रह्मरन्ध्र में गति देती है तो उसके श्वांसों के जो परमाणु हैं वह उन परमाणुओं को जागरूक भी करते रहते हैं। **हमारे यहाँ नोचन सँस्कार के पश्चात् उपनयन सँस्कार होता है।** उपनयन, वेदारम्भ यह सँस्कार सब बातों की प्रतिभा मे रहते हैं। जैसे प्रभु ने इस संसार को रचा, संसार को रचते समय स्वयं प्रभु तपा है और तपने के पश्चात् तीन तेज इस संसार में, इस भू-मण्डल में, इस ब्रह्माण्ड में, इस प्रभु की रचना में कहलाए जाते हैं। एक तेज द्यौ बन जाता है। एक तेज मेरे प्यारे! वायु बन जाता है, तीसरा तेज अग्नि बन जाता है जो लौकिक अग्नि कहलाती है। यह अग्नि लौकिक है, वायु परमाणुओं को ले करके गति करता है और द्यौ-मण्डल में उन परमाणुओं की स्थिरता हो जाती है। मेरे प्यारे! वह हृदय प्रभु का तेज है उस प्रभु के तेज के आधार पर मानव को भी अपने को तपस्वी बनाना चाहिए। हे मातेश्वरी! तू सौभाग्यशाली है जब तू अपने बालक को प्राण के द्वारा उसके केशों में अपने श्वांस की तरंगें फैला देती हैं, परणित कर देती हैं।

मुझे स्मरण आता रहता है, **एक समय रोहिणी केतु ऋषि के द्वार पर हम पहुँचे।** रोहिणी केतु ऋषि के यहाँ माता बालक के केशों में अपने श्वांसों की तरंगें फैला रही थी। उस समय मैंने प्रश्न किया कि हे देवी! यह तुम क्या कर रही हो? ऋषि पत्नी, उन्होंने कहा, ऋषिवर आइए मैं अपने बालक को जो मेरे गर्भ से उत्पन्न हुआ है इसके ऊपर

मैंने तप किया है। बारह वर्ष का तप करने के पश्चात् मैं माता बन करके जो प्राण गति कर रहा है, अपान से आता है, हृदय में हो करके आता है, हृदय में प्राण की प्रतिष्ठा है इसलिए मैं अपने हृदय के परमाणु बालक के मस्तिष्क में प्रवेश करना चाहती हूँ। मेरे प्यारे! माता के कितने ऊँचे उद्गार होते हैं। माता का हृदय कितना महत्त्वदायक होता है बालक के लिए। परन्तु जब माता इस विद्या को जानती है, जानती हुई माता ही इस बालक को ऊँचा बना सकती है।

परिणाम क्या? मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें यह उच्चारण करने के लिए आया कि मानव कितना विज्ञानमयी बन करके आया। परन्तु माता पार्वती ने यह कहा कि हमारे ऋषि-मुनियों ने विधान बनाते हुए मानव के सोलह सँस्कारों को निर्णित किया है। इनकी षोडश कला हमारे यहाँ परम्परागतों से मानी है। **षोडश कलाएँ, षोडश सँस्कार ही कहलाते हैं।** परन्तु षोडश सँस्कारों में एक नोचन संस्कार होता है। परन्तु जब धातु के द्वारा उसके केशों को शरीर से दूरी किया जाता है उस समय बालक के गिम् बृही-मस्तिक में मेरे प्यारे! एक महत्ता की तरंग उत्पन्न होती रहती हैं। एक-एक केश के नीचे एक रोहिणी प्राणकेतु केश कहलाया जाता है जो ब्रह्मरन्ध्र के मध्य में रहता है परन्तु उस केश के नीचे बहत्तर हजार नाड़ियाँ गति करती रहती हैं। जिन नाड़ियों का सम्बन्ध लोक-लोकान्तरों से होता है। मेरे प्यारे! ऐसे ही उनके ब्रह्मरन्ध्र के निचले भाग में एक घ्रात होता है जिससे मानव योग में गति करता है। गति करता हुआ परन्तु उस गति को जानकर के त्याग देता है। त्याग करके वह आध्यात्मिकवेत्ता बन जाता है। मेरे प्यारे! जिज्ञासुओं में परणित होता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

प्रवचन — दिनांक : 12 सितम्बर, 1981

।। ओ३म् ।।

ऋषियों के उद्‌गार

1. संसार के विधान में सबसे पूर्व प्रकाश आता है, कम्पनता आती है।
2. जितना आहार सुन्दर होता है उतना उसका व्यवहार सुन्दर होता है।
3. मानव का जीवन भी एक सुन्दर यज्ञवेदी ही माना गया है।
4. अष्ट भुजाओं वाली दुर्गा कौन है? जिसके अष्ट भुजाएँ हैं। दुर्गा नाम है बेटा! विद्या का।
5. कोई भी तृष्णा न उत्पन्न होना यह मुनिवरो! अध्ययन का कार्य है।
6. अध्ययन का नाम ही अनुशासन है।
7. ज्ञान का माध्यम मनीराम (मन) को कहा जाता है।
8. ज्ञान में ही ब्रह्म है।
9. हमारे यहाँ ब्रह्म में प्रवृत्ति होना ही तो याज्ञिक कहलाया गया है।
10. जितना भी जगत है यह सारा हृदय में समाहित हो रहा है।
11. वेद की जो ध्वनि है वह महान तपस्वी पुरोहित का विचार होता है।
12. देवताओं ने कहा—"हे भगवन्! हम किसी का आदर करके और अनुकरण करके देवता बने हैं।"
13. देवताजन हर समय दूसरों के कल्याण के लिए ही विचारा करते हैं। वह हर समय दूसरों को कुछ देते हैं। वे अपनी त्रुटियों को देखकर दूसरों के गुणों को धारण करते हैं।
14. जब भी तुम्हें सांसारिक कार्यों से समय मिले, उस काल में तुम्हारा श्वास व्यर्थ नहीं जाना चाहिये। कैसे उच्चारण होना चाहिए—ओ३म्!
15. जब श्वास की गति ऊपर को जाती है तो उस समय 'ओ३म्' उच्चारण करो, ओ३म् अपने मन में रहना चाहिए और जिस समय वायु गति नीचे को नासिका और घ्राण के स्थान में आये उसी काल में शान्ति का पाठ होना चाहिए। ओ३म् की व्याहृति ऊपर है और नीचे आने वाला श्वास शान्ति है।

OM

Conception of Yajna

O my noble preceptors real yajna is one by which no carnal desire is solicited and that Yajna is called non-attached-action i.e.. (Nishkam yaj).

Who is entitled to act as a priest (Ritwaj) in yajna? Only that man is authorised to be a priest who knows (Rit) Divine law of nature. What is the Rit ?

"O Sages ! the Vedic Preceptors explain the rit in other words. There are subtle particles of nature (Prakriti). They are finer than those of the flash of lightening which shines the clouds. The function of that particle is called Rit. The Priest. (Ritwaj) who knows the function of Rit is eligible to accomplish yajna Ritwaj should also be broad minded and chaste - Physically and mentally likewise.

Once my dear Mahanand ji informed me that Yajnas are not infustable hence not successful these days. I asked him its reason. He replied that he knew not. I then pointed out that so far as I know, persons have no implicit faith and firmness in their performances. They, however manage to be faithful and firm but they are not well acquainted with application (Viniyog) of yajna, If any how, some of them know the application, they can not recite Vedic Hymns correctly. If good recitors are available, they lack chastity and the knowledge of Rit. Therefore, O Son! such yajnas are not at all successful.

Rit knowing priests with their matrical voice recite vedic hymns and utter **Sawaha.** This utterance along with sacrificial fragrance meets with the particles pervading in the atmosphere. The sacrificial fire make those particles very subtle, and thousand fold powerful. Consequently they release the substance existing in them. This substance makes the atmosphere very lovely.

Come along O my pious preceptors I let us exchange our views and enjoy the loveliness with mind, words and actions.

O Sages ! I well remember when King Dashrath arranged a noble yajna for begetting male issues. All the three queens and the King himself maintained absolute celibacy for one year. Continuing celibacy they managed to sleep on the earth. When the time for performing yajna came up, a Brahma was required for that. He approached the sage named Vashisthta and requested him to accomplish Putreshthi yajna. Maharishi Vashishta told the king that he was not well versed in performing the same. The King then asked the sage what to do. He replied O King! "Maharishi Shringi is competent to acomplish such sort of yajna. Oh King! Arrange to bring him here from the Kajli forests at any cost and get the yajna perormed by such a great sage. His father is very cautious in bringing him up to lead a restrained life.

Oh Sages ! at that time the king with the help of Urvashi and other beautiful fairies brought Maharishi Shringi from the horrible forest. He was 101 years of age of unfalling celibacy. The Yajna was celebrated by him in the capacity of Brahma and it was crowned with complete success.

Oh Noble gentlemen ! I was just expressing that we should engage ourselves in performing good yajnas, so that our lives may become most excellent and pious. Finer is the life the longer it is.

Oh sages ! the reverence in this world and in the next, is due to excellent actions. We should be keenly inclined towards noble deeds. As soon as we absorb ourselves in charming actions, our existence becomes glorious.

Oh my old religious preachers ! much before I narrated some facts about the primitive creator. In the begining of creation, the creator performed a grand yajna for the welfare of the world. His lightened fire is continuously glowing in the Devotional hall (world yajna shala) right upto this time. In the Devotional hall great personalities have passed on, offering their oblations but his yajna is going on with no inferiority in any activity.

Pujyapad Gurudev

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

वैदिक कुमार

श्रीमति पूनम त्यागी व श्री संजीव त्यागी जी निवास स्थान बल्लभगढ़, हरियाणा (मूल निवासी ग्राम दिनकरपुर, जिला मुजफ्फरनगर) ने अपने सुपुत्र चिरन्जीव वैदिक कुमार के शुभ जन्मदिवस 8 मई 2015 के आगमन पर 11001/- रु. का सात्त्विक सहयोग समिति को पुस्तक प्रकाशित करने के लिए उदारता से प्रदान किया है। श्री त्यागी जी समिति के प्रकाशन के कार्य में काफी लम्बे समय से सहयोग निरन्तर बनाये हुए हैं और प्रतिमाह एक हजार की राशि 'मासिक सहयोग' के रूप में प्रकाशन के लिए प्रदान कर रहे हैं। जिसके लिए समिति हृदय से बारम्बार आभार प्रकट करती है।

अपने माता-पिता जी की छत्रछाया से ही श्री त्यागी जी पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के ज्ञान से जुड़ गये थे क्योंकि इस याज्ञिक परिवार ने पूज्यपाद गुरुदेव की अनुपम कृपा का शुभ लाभ उनके द्वारा यज्ञों व प्रवचनों के माध्यम से अनेक बार उठाने का सौभाग्य प्राप्त किया। उसी धारा को निरन्तर जागृत रखते हुए अपने सेवाकाल को भी बड़ी निष्ठा व कर्मठता से करते हुए लाक्षागृह बरनावा में आयोजित यज्ञों में अनेक बार पति-पत्नि यजमान बनकर और साहित्य का निरन्तर अध्ययन करते हुए अपने को परिवार सहित ऊर्ध्वा गति प्रदान करने में संलग्न हैं।

समिति त्यागी जी के सौभाग्यशाली पुत्र प्रिय वैदिक कुमार को जन्मदिवस की शुभकामनायें प्रदान करते हुए उज्ज्वल भविष्य के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है और समस्त परिवार का प्रकाशन सहायता के लिए पुनः से आभार प्रकट करते हुए सुख, शान्ति, दीर्घ आयु व सर्वतोन्मुखी उन्नति के लिये भी ईश्वर से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

श्रद्धा-बोध

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के प्रवचनों की अमृत वर्षा को सुचारू रूप से निरन्तर सुन्दर और आकर्षित प्रकाशन करने के लिये समिति को पचास हजार रुपये की राशि का सात्त्विक सहयोग समिति के प्रकाशन मन्त्री श्री मधुसूदनेश्वर प्रकाश जी ने उदारता से प्रदान किया है। जैसा कि विदित है कि पहले भी एक लाख रुपये का सात्त्विक दान प्रकाशन के कार्य के लिए प्रदान करके उन्होंने अपने कार्य काल में साहित्य को बहुत ही सुन्दर व प्रेरणादायक बनाने के लिए निरन्तर भरसक प्रयास की अपनी योजना को क्रियान्वित कर रखा है और उसी ओर और ऊर्ध्वागति करने के लिए अपनी निष्ठा, लग्न व श्रद्धा का एक उत्तम स्वरूप समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है।

समिति प्रकाशन मन्त्री जी के इस सहयोग के लिए हृदय से बारम्बार आभार प्रकट करती है और परमपिता परमात्मा से उनके समस्त परिवार की सुख, शान्ति, दीर्घ आयु एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	50.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	50.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	50.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	50.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	50.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	30.00
10.	शंका-निवारण	30.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
13.	देवपूजा	20.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	110.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	110.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	100.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	25.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	25.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	30.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	25.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पंच-महायज्ञ	30.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	30.00
29.	याग-मन्जूषा	25.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	25.00
32.	याग और तपस्या	45.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	25.00
35.	याग-चयन	25.00
36.	दिव्य-रामकथा	110.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	25.00
38.	दिव्य-ज्ञान	35.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	80.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	25.00
41.	आत्म-उत्थान	30.00
42.	तप का महत्व	30.00
43.	अध्यात्मवाद	25.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	35.00
45.	वैदिक-प्रभा	30.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	35.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	30.00
50.	आत्मा का भोजन	35.00
51.	साधना	30.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 6)	60.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
56.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 7)	60.00
57.	माता मदालसा	40.00
58.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 8)	60.00
59.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 9)	65.00
60.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 10)	70.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 11)	80.00
63.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 12)	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएं	50.00
65.	प्रभु दर्शन	50.00
66.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 13)	80.00
67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम्, कर्म भूमि लाक्षागृह	10.00

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः-

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला-बागपत, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 01234-240395
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)। मो. नं. : 09412888050
3. सुश्री नीरू अबरोल, के-3, लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-26498737
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-2642052
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4, पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री विवेक त्यागी, 16ए, अशोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0122-2316196
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मो. नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110-मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मो. नं. 09899228860, 09871367937
12. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23282088
13. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे.पी. नगर (उ.प्र.) मो. नं. 09412139333
14. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मो. नं. 09313530505
15. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
16. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	**1000 रुपये**
श्री विवेक त्यागी, अल्कापुरी, हापुड़, उत्तर प्रदेश	**1000 रुपये**
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	**1000 रुपये**
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	**1000 रुपये**
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	**500 रुपये**
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	**500 रुपये**
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	**251 रुपये**
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	**251 रुपये**
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	**250 रुपये**
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	**200 रुपये**
डॉ. ओ.पी. आर्य, आगरा, उत्तर प्रदेश	**125 रुपये**
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्णा नगर, दिल्ली	**100 रुपये**
श्रीमती वीना त्यागी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश	**100 रुपये**
मास्टर कवन्धि, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	**101 रुपये**
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	**101 रुपये**

सूचना

सभी आजीवन/वार्षिक सदस्यों को यौगिक प्रवचन मासिक पत्रिका भेजी जा रही है। पत्रिका प्रत्येक मास की 10/11 तारीख को प्रेषित की जाती है। किसी भी सदस्य को पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में हमें एक सप्ताह के बाद अपनी सदस्य संख्या और दूरभाष नं. सहित निम्न पते पर लिखें या सूचित करें। सूचना मिलने पर पत्रिका पुनः प्रेषित करेंगे।

डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, ए-59, पंचशील एन्क्लेव,
नई दिल्ली-110017, दूरभाष-011-41030481

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

आज कोई मानव संसार में मिथ्यावाद उच्चारण करके नाना प्रकार के द्रव्य को एकत्रित कर लेता है। अरे मानव! वह द्रव्य तेरे साथ नहीं जायेगा। तेरे साथ तो वही कर्म जायेगा जितना तुम अपने प्रभु से मिलान करते हो। आज तू अभिमान में विराजमान हो जाता है कि मैं इतना द्रव्यपति बन गया हूँ इतने गृह निर्माण किये हैं इनका मैं स्वामी हो गया हूँ परन्तु यह तेरे हृदय में अभिमान है। यह अभिमान तुझे स्वयं निगल जायेगा। यह गृह यहीं के यहीं रह जायेंगे। परन्तु एक समय वह आयेगा कि यह अभिमान ही तुझे निगल जायेगा। मुझे स्मरण है कि यहाँ महाराजा दुर्योधन ने क्या कहा था, महाराजा रावण ने क्या कहा था कि मैं विजयी बनूँगा। राम को आने नहीं दूँगा। रावण का चिन्ह भी नहीं रहा संसार में। कहाँ है रावण? कहाँ है वह स्वर्ण की लंका? वह इस पृथ्वी में रमण कर गयी। वह गृह दृष्टिपात् भी नहीं आते। परन्तु हम कल्पना कर लेते हैं, विचाराधारा बना लेते हैं कि रावण राजा था परन्तु उनका चिन्ह हमें प्राप्त नहीं होता।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 43 : अंक : 512
मई 2015

मूल्य :
दस रुपये

प्रकाशक, मुद्रक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश (प्रकाशन मंत्री वै.अ.स.) द्वारा वैदिक अनुसंधान समिति पञ्जी०
के लिए नवप्रभात प्रिंटिंग प्रैस, दिल्ली से छपवाकर सी-38,
शिवालिक मालवीय नगर, नई दिल्ली-17 से प्रकाशित।
(अवै०) सम्पादक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश, दूरभाष : 41030481

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2015-17
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2015-2017
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-05-2015
Published on 5th day of the same month

POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-05-2015
Published on 5th day of the same month